साहित्य और विमर्श

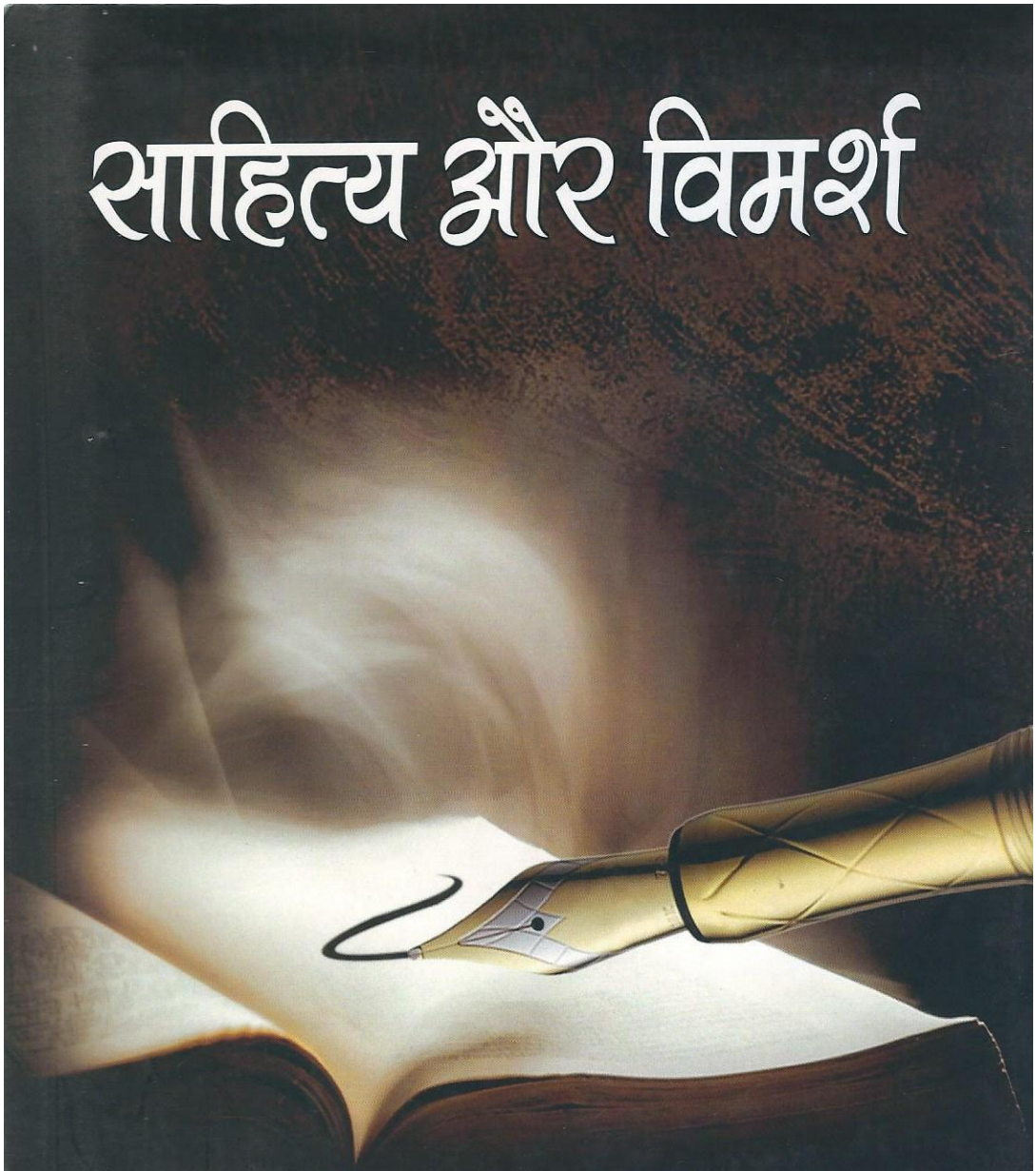

मुख्य सम्पादक

डॉ. हरप्रीत कौर

सम्पादक

डॉ. लोकेश कुमार गुप्ता

साहित्य और विमर्श

मुख्य संपादक
डॉ. हरप्रीत कौर

संपादक
डॉ. लोकेश कुमार गुप्ता

श्रीसाहित्य प्रकाशन, दिल्ली

ISBN : 978-93-86402-48-6

प्रकाशक :
श्रीसाहित्य प्रकाशन
डी-580, अशोक नगर, गली नं. 4
निकट वजीराबाद रोड, शाहदरा, दिल्ली-110093
मो० : (0) 9873390338
web: shrisahityaprakashan.com
email: shrisahityaprakashan@gmail.com
© सम्पादक
प्रथम संस्करण : 2019
आवरण : अमित कुमार
शब्द-संयोजन : अर्पित वशिष्ठ
मुद्रक : पूजा ऑफसेट प्रिंटर्स
₹ 650

Sahitya aur Vimarsh
Edited by Dr. Harpreet Kaur &
Dr. Lokesh Kumar Gupta

प्रस्तावना

माता सुन्दरी महिला महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित एक दिवसीय 'साहित्य और विमर्श' नामक राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत चुनिन्दा शोधपत्र इस पुस्तक में समाहित है। पुस्तक का मूलभाव दलित चेतना पर आधारित है। साहित्य की परम्परा में दलित वेदना एवं संघर्ष का वर्णन सचमुच ही हृदय विदारक है और इसके उदाहरण पुस्तक में प्रचुर मात्रा में हैं जो कि पाठकों को भावनात्मक स्तर पर छू जाते है। साहित्य का मूलभूत प्रयोजन है, समाज और राजनीति को सही दिशा की ओर अग्रसर कराना। पारम्परिक दलित साहित्य ने यह कार्य अत्यंत प्रभावशाली तरीके से किया है। आदर्श समाज के उत्कृष्ट मूल्यों का वर्णन करके, इन साहित्यिक रचनाओं ने लोगों को सामंतवादी मानसिकता से उभरने के पथ का प्रदर्शन किया। स्त्री की वेदना, संघर्ष, उत्पीड़न, विडम्बना इत्यादि जैसे स्त्री विषयक प्रश्नों को साहित्य अपने गर्भ में समेटे हुए है।

भारतीय परंपरा में अनेकों आध्यात्मिक गुरुओं, मुनियों, समाज सुधारकों एवं शिक्षकों ने संकीर्ण मनोवृतियों से ऊपर उठकर आदर्श समाज के अपेक्षित सर्वमान्य मूल्यों पर जोर दिया। समाज की बाह्य असमानताओं एवं विभिन्नताओं को नकार कर उन्होंने सांस्कृतिक, भावात्मक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को प्राथमिकता दी। नैतिकता और आध्यात्मिकता को भावसूत्र में बाँधकर, जनसाधारण को सकारात्मक दिशा प्रदान की; जिससे समृद्ध, परिपूर्ण और लोककल्याणकारी समाज स्थापित हो सके। चूँकि ये सिद्धान्त हमारी भक्ति और धर्म से जुड़े थे इसलिए ये हमारी सभ्यता और संस्कृति का अटूट हिस्सा बन गये।

मध्यकालीन समाज-सुधारक गुरु नानक देव जी के उपदेशों ने संसार के सबसे नवीन धर्म का रूप लिया। गुरु नानक का स्थान अद्वितीय एवं अनुपम है क्योंकि गुरुदेव के सिद्धान्त न केवल आध्यात्मिकता के निकट लेकर जाते हैं, अपितु

प्रतीत होने लगा परंतु साहित्य इन नकारात्मक परिस्थितियों में भी एक सकारात्मक सोच को जन समाज में प्रफुल्लित कर रहा था। इस सन्दर्भ में साहित्य का अपना महत्वपूर्ण योगदान है। आधुनिक समय के कई लेखकों ने दलितों एवं स्त्रियों की समस्याओं को अपनी लेखनी द्वारा उजागर किया और उन्हें अधिकार दिलाने का भरसक प्रयास किया। स्त्रियों के स्वाभिमान एवं गरिमा स्थापित करने का पुरजोर प्रयत्न उनकी रचनाओं में स्पष्ट तौर से नज़र आता है। मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में नैतिक दायित्वों को उजागर और परिपक्व करती है। वर्तमान रचनात्मक साहित्य में मानवता के सिद्धान्तों जैसे बन्धुत्व, स्वतन्त्रता, समानता, न्याय इत्यादि का वर्णन लोगों को जागरुक करने में अति सहायक सिद्ध होता है एवं सच्चे सामाजिक लोकतन्त्र एवं आदर्श समाज के स्वप्न को साकार करने में अति विशिष्ट भूमिका निभाता है।

इन्हीं उत्कृष्ट सामाजिक मूल्यों को स्थापित करने के सन्दर्भ में रत्नकुमार सांभरिया द्वारा रचित साहित्य दलित संवेदनाओं से जुड़े सरोकारों को अत्यन्त प्रभावशाली तरीके से उजागर करता है और नए लेखकों को उनकी शैली अपनाने को प्रेरित करता है।

सामाजिक सन्दर्भ और सरोकारों के मुद्दों पर संगोष्ठी में विचार-विमर्श हुआ और अनेक शोध-आलेख पढ़े गये। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. लोकेश कुमार गुप्ता ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। साहित्य की निरन्तरता में यह संगोष्ठी एक छोटा सा कदम है। प्रकाशन के रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है **साहित्य और विमर्श** (Literature and Discourse) इस आशा के साथ कि वर्तमान समाज को विद्वत बनाने की दिशा में यह हमारा विनीत और रचनात्मक योगदान होगा।

—डॉ. हरप्रीत कौर
प्राचार्या
माता सुन्दरी महिला महाविद्यालय
(दिल्ली विश्वविद्यालय)

₹ 650/-

श्रीसाहित्य प्रकाशन
डी-580, गली नं. 4, अशोक नगर
शाहदरा, दिल्ली-110093
E-mail : shrisahityaprakashan@gmail.com
Website : www.shrisahityaprakashan.com

ISBN 978-93-86402-48-6